सागर - प्रकाश

अविरल रेवा धारा पूछे,
रुकता है तू क्यों हर पल?
मिलने सागर की लहरों से,
संग मेरे तू आज निकल चल।

शंकित मन ले क्यों तू भटके?
डूब के मुझमें धुंद मिटा चल।

तट पर क्यों तू कंकड़ बीने?
अम्बुधि धन संजोने संग चल।

दुविधा में मन को क्यों डाले?
शांत समुंदर पार चला चल।

ज्ञान क्यों ढूंढे उथले जल में?
गहराई का मंत्र समझ चल।

टेक गडा क्यों आवरणों में?
पाश धरा के तोड़ के फिर चल।

मिलने सागर की लहरों से,
संग मेरे तू आज निकल चल।

समीर खांडेकर
21.07.2013, आय. आय. टी. कानपुर